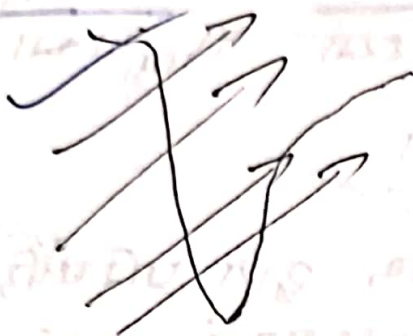
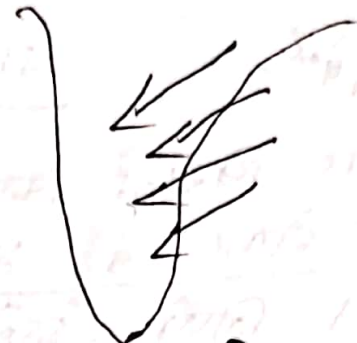


Ans.) मानव का तापमान ऐसे पक्षों से है जो
 ऊँच में परिवर्तन होने से अपनी दिशा से परिवर्तन
 करती है। जिसे ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण दिशा 30° से
से 45°-90° की ओर तथा शीत ऋतु में 30° पर्य
से 30° पर्य की ओर प्रवाहित होता है जिसे क्षय
जाता है। मानव और शीत कालीन मानव से



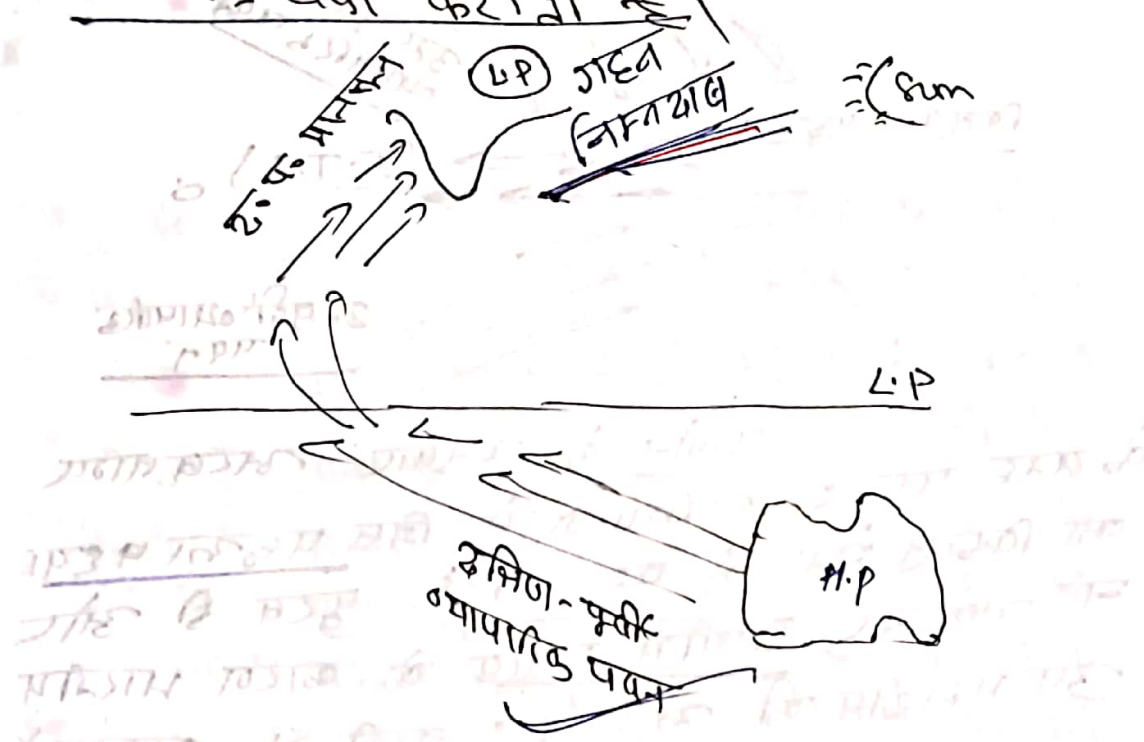
ग्रीष्मकालीन
 मानव
S.W to N.E



शीत कालीन
N.E to S.W

भारत पर अभ्ररूप प्रभाव डालने
 वाला यह मानव वेजानि से है ^{जिस} ~~लेकिन~~ यह अभी
 भी एक जटिल प्रश्न है। जहाँ एक 6 और
दूसरे प्रभाव में जटिलता है वही दूसरी उत्पत्ति
प्रक्रिया भी जटिल है। इसका लक्षण अनिश्चित

वहाँ निम्न थाप सा (एक वृद्ध) क्षेत्र का विकास होगा
 है यह निम्न थाप इतना गहन होगा है कि इसके
 तुलना में विशुद्ध रेखीय क्षेत्र उच्च थाप के तरह
 व्यपहार होगा है। ऑस्ट्रेलियाई क्षेत्र से चलने
 वाली ड० पूर्वी व्यापारिक पथन जब विशुद्ध रेखा
 में पार करती है तो भारतीय निम्न थाप से
 आकर्षित होकर वेल्थ के नियम या अनुसरण
 को हुए याहिनी बोर मुड़ जाती है। यही
ड० प० मानकन है। दरख सागर से चलने
 के कारण यह बहुत अधिक क्षेत्र है और भारत
 में प्रयाप्त वर्षा कराती है।

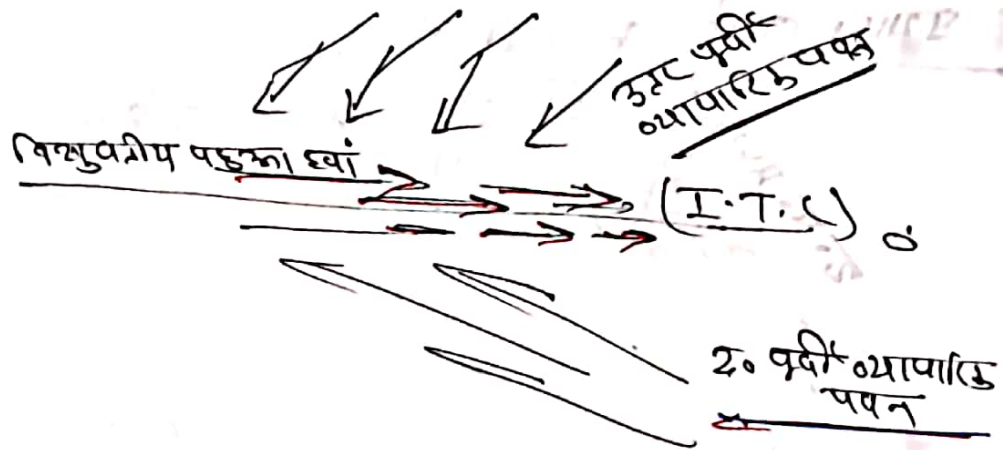


वर्तमान समय में यह विशाल अपनी
पालंगिया को चुका है। यदि इस विशाल को
 आधार माना जाय तो मानसून से उत्पन्न
 एवं विकास सबसे जर्म महीना मई में
 होना चाहिए जबकि वास्तव में ऐसा नहीं
 होगा। इसका विरोध इस बात को लेकर
 है कि जब वर्षा का अनुभव और दक्षिणापतन

हीना निश्चित है जो मानक को ही निश्चित होना चाहिए, जबकि वास्तव में यह भी संभव नहीं है।

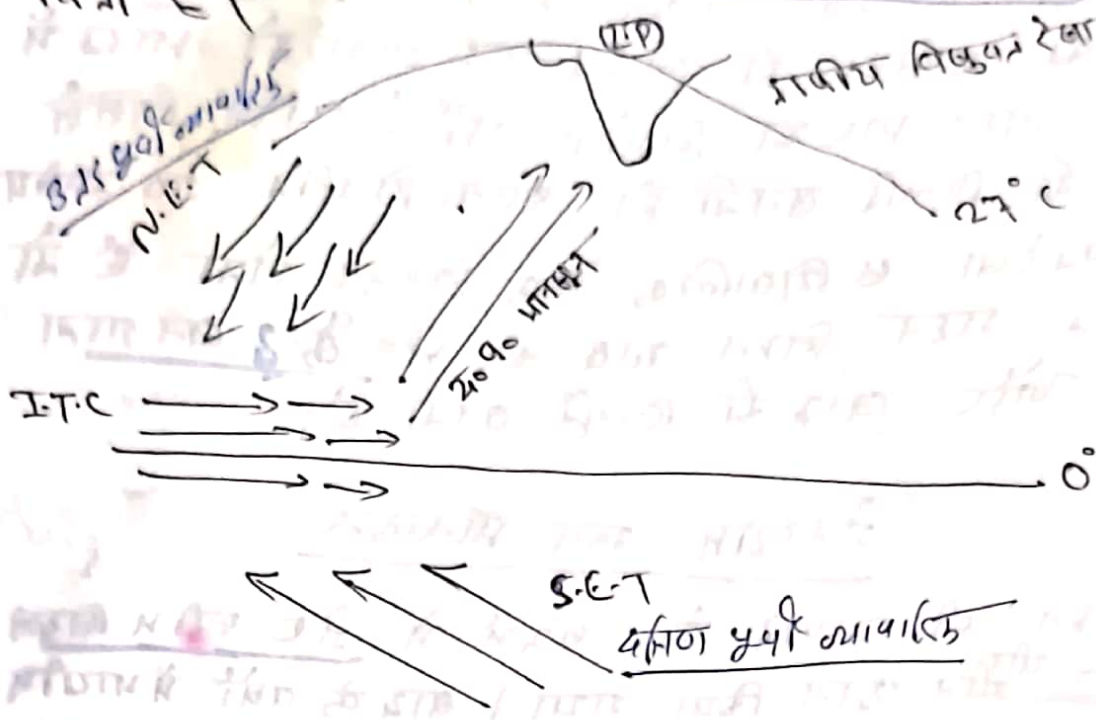
विषुवतीय पट्टिका एवं विज्ञान

फ्लोन द्वारा परिपाकित इस विज्ञान 2017 में बनाया गया है कि मानक रूप ली अर्थात् में विषुवतीय पट्टिका एवं ही है। विषुवतीय पट्टिका एवं ही उत्पत्ति अन्तः दृष्टि अभिवर्ण (I.T.C) के कारण होती है।



के तरह पर फ्लोन के अनुसार अत्यंत गहरे का विकास होता है वह वीर्य पट्टिका पट्टा न बनाए। दक्षिणी प्रभाव के कारण भारतीय उपमहादीप की ओर मुड़ जाती है। वास्तव में जब कार्य उत्तरायण की स्थिति में होता है तो दक्षिणी विषुव रेखा का विस्तार 35° उत्तरी अक्षांश अर्थात् त्रिपालिका की पदस्थली तक हो जाता है। जैसी स्थिति में भारत के नीचे अर्ध-विषुव रेखा के समीप I.T.C का कार्य नहीं हो पाता है। यह कार्य त्रिपालिका के पदस्थली क्षेत्र में संपन्न हो पाता है। इसी कारण

विशुद्ध ग्रीष्म पदुमा एवा ही तदा भावीय प्रदेशा की ओर मुड़ कर 20° पर मानसून का रूप ले लेती है।



गौर से देखा जाए तो हम पाते हैं कि एक सिद्धान्त के समय में ही ग्रीष्म सिद्धान्त प्रभाव ही प्रमुख है। विद्वान् कई विश्वों ने पैगों में सौर अन्तर् जि माना है। दानादि जहाँ फलों के सिद्धान्त में मानसून ही रूप में I.T.C से प्रमुख माना गया है, वही प्रथम सिद्धान्त में इसे एक सामान्य प्रक्रिया माना गया है। जब 20° पूर्व व्यापारिक पवन ही 20° पर मानसून का रूप ले लेती है। फ्रॉन्ट के सिद्धान्त की भी वही समझा है जो प्रथम सिद्धान्त की है। बाकी ग्रीष्म का उत्तरायण एवं दक्षिणायन वेग निश्चित है। क्या क्या है कि ग्रीष्म विषुव रेखा की तो शिफालि के पास प्रवेश रुक पड़ जाती है तो अन्त 15° से 18° तक ही सीमित रह जाती है।